NEWS:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:30 PM Page 200



नवदुनिया

नानाजी का शरीर एम्स को दान

# नानाजी का शरीर एम्स को दान

जानेमाने समाजसेवी व दीनदयाल शोध संस्थान के संस्थापक नानाजी देशमुख का पार्थिव शरीर अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) को सौंप दिया गया। रविवार को विशेष विमान से चित्रकूट से उनके शरीर को यहां लाया गया था। नानाजी दधीचि देहदान समिति के प्रथम देहदानी थे। उनकी इच्छा थी कि उनकी मृत्यु के बाद उनका शरीर मेडिकल के छात्रों के रिसर्च के लिए एम्स को सौंप दिया जाए।

एम्स के डीन और एनाटोमी विभाग की अध्यक्ष प्रो. रानी कुमार ने बताया कि नानाजी का पार्थिव शरीर एम्स को रविवार शाम छह बजे दान किया गया है। 94 वर्षीय नानाजी का शरीर चिकित्सा क्षेत्र के विद्यार्थियों के पढ़ाने और शोध के काम आएगा। उनकी उम्र काफी हो चुकी थी, इसलिए उनका कोई भी अंग किसी अन्य व्यक्ति के शरीर में प्रत्यारोपित नहीं किया जा सकता है।

नानाजी का शरीर एम्स में सौंपने वाली टीम ने भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी, लोकसभा में विपक्ष के नेता सुषमा स्वराज, भाजपा अध्यक्ष नितिन गडकरी, रविशंकर प्रसाद, राजनाथ सिंह सहित कई भाजपा नेता थे। सभी ने नानाजी के शरीर को श्रद्धांजलि दी और उनके शरीर को एम्स को सौंप दिया। इससे पहले उनके पार्थिव शरीर को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, सांसद अनिल माधव दवे, संस्थान के अध्यक्ष वीरेन्द्र जीत सिंह चित्रकूट से यहां लेकर आए।

लोकसभा उपाध्यक्ष करिया मुंडा, राज्यसभा में विपक्ष के नेता अरुण जेटली सहित भाजपा के तमाम नेता दिल्ली हवाई अड्डे पर मौजूद थे। उनके पार्थिव शरीर को लोगों के अंतिम दर्शन के लिए झंडेवालान स्थित संघ के केशवकुंज कार्यालय में रखा गया। पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम, संघ सरकार्यवाह भैयाजी जोशी, सुरेश सोनी, मदनदास देवी, गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल निशंक और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमन सिंह तथा अन्य नेताओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉक्टरों के मुताबिक नानाजी के शरीर को रसायन में सुरक्षित रखा जाएगा। इसे जब तक चाहे सुरक्षित रखा जा सकता है। धमनियों, मांसपेशियों और अलग-अलग अंगों जैसे हाथ-पैर, मस्तिष्क आदि को भी अलग कर प्लास्टिसाइज किया जा सकता है, ताकि अधिक से अधिक छात्रों को उनके शरीर पर शोध करने का अवसर मिल सके।

दैनिक जागरण

पद्म विभूषण नानाजी देशमुख नहीं रहे

दिल्ली में होगा नानाजी का देहदान, प्रदेश में एक दिन का शोक

स्वदेश

# नाना जी ने समाजसेवा सीखी थी, राजनीति नहीं

कोई महारत नहीं, शिक्षा नहीं, राजनीति नहीं, चिकित्सक नहीं, साहित्यकार नहीं, पत्रकार नहीं, फिर भी स्वाधीन भारत में शिक्षा कैसी हो इस हेतु सरस्वती शिशु मंदिर प्रकल्प की योजना, राष्ट्रधर्म, पांचजन्य व स्वदेश का प्रबंधन संभाला। उन्होंने समाजनीति सीखी थी। उस संकल्पित को कोई काम सौंपा गया। उन्होंने श्रेष्ठता से किया यह सब हुआ संघ के संस्कारों से, ऐसे थे पू. नानाजी।

यह शब्दांजलि राजवाड़ा के गणेश हॉल में मालवा प्रांत संघचालक श्री कृष्ण कुमार अष्ठाना ने आधुनिक काल के नवदधीच पू. नानाजी देशमुख को दी। अवसर था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि सभा का। श्री अष्ठाना ने कहा कि पू. नानाजी जब राजनीति में उतरे तो बलरामपुर से विजयी होकर आए और ऐसे कीर्तिमान रचे जो आठ-आठ बार जीतकर आए सांसद भी नहीं कर पाए। भारत के इस सपूत ने राजनीति से सन्यास लेकर एक आदर्श प्रस्तुत किया जिसे युगों तक नहीं भुलाया जा सकता। आज पू. गुरुजी होते तो उनकी आंखों से दूसरी बार आंसु आते। नानाजी संकल्प के धनी थे। उन्होंने गुरुजी के बताए मार्ग पर सीधा जीवन जीया। पू. गुरुजी का ध्येय वाक्य था, मैं नहीं तू ही और नानाजी का, अपने लिए नहीं अपनों के लिए। वे उस दिन विदा हो गए, जिस दिन चन्द्रशेखर आजाद विदा हो गए थे। श्री अष्ठाना जी ने कहा कि पू. नानाजी ने संघ ध्वज को सर्वव्यापी बना दिया। जनसंघ व जनता पार्टी के लिए रास्ता बनाया।

अष्ठाना जी ने जयप्रकाश नारायण के साथ का प्रसंग बताया कि किस प्रकार नानाजी ने जयप्रकाश नारायण के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया और बिहार की कांग्रेस सरकार से संघर्ष किया।

नानाजी ने समाजसेवा सीखी थी राजनीति नहीं